

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता ।
या वीणावर दण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्मासना ॥
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि दैवैः सदा वन्दिता ।
सा माम् पातु सरस्वति भगवति निःशेष जाड्यापहा ॥

उषा सत्यव्रत,
3/५४. रूपनगर
देहली - 7.

तथाऽचिराऽम्भः सुतरां स्फुरन्ति, पश्येह नीलेषु घनेषु देव ।
नूनं समृद्धिं सलिलस्य दृष्ट्वा चरन्ति शूरास्तरुणा द्रुमेषु ॥ Cr. Ed 1.

इमानि यूथानि वने मृगाणां चरन्ति धावंति रमंति शंभो तथापि रावा
रुवंति रम्येषु नीलेषु घनेषु देव, नूनं समृद्धिं सलिलस्य दृष्ट्वा
शूरास्तरुणा द्रुमेषु टीका, I, शा.

Translation — हे शम्भो, वन में मृगों के ये झुण्ड आनन्दित हो इतस्ततः दौड़ रहे हैं। और हे देव, देखिए-काले काले मेघों में विद्युत भलीभांति चमक रही है। मानो जल की वृद्धि को देख शूरगण तरुण वृक्षों पर विचरण कर रहे हैं।

संस्कृत टीका - यूथानि समूहाः विरावान् विविधान् रावान् वाशितानि रुवंति शब्दयन्ति रम्येषु सुभगेषु नीलेषु घनेषु मेघेषु (One word is not clear) सलिलस्य ~~[illegible]~~ ______ समृद्धिं बाहुल्यं शूरा बलवंतः तरुण युवानः उद्दीपन ______ तायाँ भुवि संचराभाज्जलस्य तत्क्षणं वृक्षा द्रुमेषु सरंति भ्रमाति ।

परि भ्रमश्चापि पराजितेषु, नरेषु संमोहनखेलनेन ।
यस्यां जलक्रीडनसंगतासु, न स्त्रीषु शंभो गृहदीर्घिकासु ॥ 3.35.
Cr. Ed.

No:

~~Not found in the Tika~~

टीका में Cr. Ed. की 3.34 श्लोक की पहली दो पंक्तियां तथा
वे श्लोक की अन्तिम आधी पंक्ति जोड़ कर श्लोक बनाया है
भृंगाश्च यस्यां शशिकान्तभित्तौ प्रलोभ्यमानाः प्रतिबिम्बितासु
परिभ्रमयंति परागिणीषु निशासु शंभो गृहदीर्घिकासु ॥
3.35.

हिन्दी अनुवाद – और हे शम्भो ! जिस (वाराणसी) में संमोहन खेलों
से पराजित पुरुषों में तथा गृह की बावलियों में जलक्रीड़ा के
लिए एकत्र हुई स्त्रियों में ही परिभ्रम होता है । अन्यत्र नहीं ।

संस्कृत टीका – गृहेषु दीर्घिकासु गेहपुष्करिणीषु शशिकांते-
श्चन्द्रकांतरत्नैर्निर्मिता यां भित्तौ ? प्रतिबिम्बितासु
प्रतिसंक्रांतासु प्रतिबिम्बितैः पद्मैः प्रलोभ्यमाना भृङ्गाः
परिभ्रमयाति प्राप्नुवंति परागिणीषु पद्मादि पुष्परेणु
युक्तासु निशासु रात्रिषु आपुरिमते निशा शब्द आवंतः हे शंभो
यस्यां नगर्याम् । 3.35.

गत्वा सुपुण्यां नगरीं सुतीर्थां दृष्ट्वा च लोलं सदशाश्वमेधम् ।
स्नात्वा च तीर्थेषु विमुक्तपापः स केशवं द्रष्टुमुपाजगाम ॥ Cr. Ed. 3.43.

~~Similar same thing described in other words as~~

~~तत्रैव नैमिषारण्ये गयायां अरण्यमेव च गत्वा स्नात्वा ___ सौख्य~~
~~विमुच्यते । टीका, 3.10.~~
>Same sloka number. 3.53. No tika.

उस परम पवित्र तथा तीर्थभूत नगरी में जाकर दशाश्वमेध के साथ लोल का दर्शन किया तथा (वहां के) तीर्थों में स्नान कर तथा पाप[illegible] होकर (उसके बाद) वे केशव का दर्शन करने गये ।

२० पेज तक चतुर्थ अध्याय समाप्त

तमापतन्तं भगवान् संनिरीक्ष्य त्रिलोचनः ।
बाहुभ्यां प्रतिजग्राह करेणैकेन शङ्करः ॥ — Cr. Ed. 5.11.

*इत्युक्ताः कम्पमानास्ते जग्मुर्गृह्योर्वशीं दिवम् ।
[इन्द्र]ाक्षाय तां प्रादात् रूपयौवनशालिनीम् ॥ — * 7.19. टीका No. 9.19.

[तां] प्रादात् — को प्रादात् ?) काम ने इन्द्र को उर्वशी को दिया

[आ]चक्षुश्चरितं ताभ्यां धर्मजाभ्यां महामुने ।
[देव]राजाय कामाद्यास्ततोऽभूद् विस्मयः परः ॥ — 7.20. धर्मजौ. नरनारायण

[को] धर्मजौ ?) to whom does this refer ? What is the total meaning of the two verses ?) 7.19-20.

~~[illegible] पत्रा~~, 18. Same No in tika. 5.11. Same śloka.

टीका — तं पूषणं बाहुभ्यां बाह्वोः सप्तम्यर्थे तृतीया

* टीका No 9.19. (Cr. Ed. No. 7.12.) संस्कृत टीका, — गृह्य गृहीत्वा प्रादुः प्रायच्छन् लुङि छिल च्लेः सिचू नः उसदाओ[illegible] ।

Cr. Ed. No. 7.20. टीका No. 9.20. The śloka in the manuscript reads — आचख्युश्चरितं ताभ्यां . . . .

संस्कृतटीका — आचख्युरकथयन् ताभ्यां धर्मजाभ्यां तयोर्धर्मजयोर्नरनारायणयोः परोऽतिशायी तो विस्मयो भूद्देवराजस्येति शेषः ।

5.11. भगवान् त्रिलोचन शंकर ने उन्हें आते देख एक ही हाथ से उनकी दोनों भुजाओं को पकड़ लिया ।

7.19 — ऐसा कहे जाने पर वे सभी कांपते हुए उर्वशी को लेकर स्वर्ग में गये और इन्द्र को वह रूपयौवनशालिनी बाला दे दिया ।

7.20 — हे महामुने ! कामादि ने इन्द्र से उन धर्मजों — (नर और नारायण) का चरित्र कहा जिससे उन्हें अत्यन्त विस्मय हुआ ।

२३ पन्ना तक पञ्चम अध्याय समाप्त

रथं चन्द्रमसश्चार्द्धसहस्रं हंसवाहनम् ।
हरयो रथवाहाश्च आदित्या मुनिसत्तम ॥ १.२०.

टीका – रथे चन्द्रमसः सार्धसहस्रं हंसवाहनम्,
हरयोरथवाहाश्च आदित्या मुनिसत्तम ॥ १२. २०.

संस्कृत टीका – गन्धर्वा देवा मयूरसदृशाः पक्षिविशेषा गन्धर्वाइव भुजगेन्द्राः सर्पराजाः सुदारुणांगराश्मिनातिकठिनाः श्वेतानि सित वर्णानि सुरम्या अपत्यानीति कुलीनत्वं वृषाणां दर्शितं उग्रजवानि तीक्ष्णवेगानि क्लीवत्वमार्जम् ।

हिन्दी अनुवाद – हे मुनि श्रेष्ठ ! चन्द्रमा के रथ के वाहक अर्धसहस्र (पांच सौ) हंस हैं । आदित्यों के रथ के वाहक घोड़े हैं ।

सदैव वर्ज्यं शयनमुदक्शिरस्
तथा प्रतीच्यां रजनीचरेश।
भुञ्जीत नैवेह च दक्षिणामुखो
न च प्रतीच्यामभिभोजनीयम् ॥ 14.5।

...ा 18.50.

...त टीका — उदक उदीच्यां शिरो यत्र प्रतीच्यमभि पश्चिमाभिमुखं भोजनीयमन्नं भवेत् पूर्वोत्तराभिमुखाभीति यावत् पूर्वदक्षिणतः शयनम् शिरस्यगस्त्यमादाय शयीताथ पुरन्दरामित्यन्यत्र।

अनुवाद - हे राक्षसराज। उत्तर एवं पश्चिम की ओर शिर कर शयन करना सदा वर्जनीय है। दक्षिण और पश्चिम की ओर मुख कर भोजन ~~करना~~ नहीं करना चाहिए।

३२ पत्रा. अष्टम अ. सम्पन्न,

न लङ्घयेत्पुरीषासृक्ष्ठीवनोद्वर्तनानि च।
गृहादुच्छिष्टविण्मूत्रे पादाम्भांसि क्षिपेद्बहिः॥ १८.२१.

No change.

टीका No. 19. 21.

संस्कृत टीका – पुरीषं मलं असृअ ? पाठान्तरेऽपि ष्ठीवनं
उद्वर्तनमन्येनां ? उन्मार्जितमंगरागादि उच्छिष्टानि विडादि
बहिरुपजेत्।

अनुवाद – पुरीष (विष्ठा), रक्त, ष्ठीवन (थूक) एवं उद्वर्तन
(उबटन) का लङ्घन नहीं करना चाहिए। उच्छिष्ट पदार्थ
विष्ठा, मूत्र एवं पैर धोने के जल को घर से बाहर फेंक
देना चाहिए।

. पत्रा 34 नवम अध्याय समाप्त

विषोद्बन्धानं शस्त्राम्बु वह्निपातम् तेषु च ।
बाले प्रव्राजि सन्यासे देशान्तरमृते तथा ॥ 15.44

टीका – 19. 43.

शस्त्राम्बु के स्थान पर शस्त्रास
प्रव्राजि " "
(प्रव्राजि) कारा. प्रव्रज्या

टीका – उद्बन्धनं पाशेनात्मनो मारणं पातः प्रपातः भृग्वादि पतनं विषादिनामृ तेष्विति द्वन्द्वात्परः शब्दः सर्वत्र योज्यः प्रव्रज्यया संन्यासे तथा शब्देन प्रायानशनादि मृत्युग्रहणम सद्यः शौचमेकं दिनामीतियावत तच्चतुर्विधं चतुष्यकारकमुक्तं मुनि भिर्मितान्तरैः एकाद्वित्रिचतुर्दिनेषु शौचामित्याख्यातामीति तदुक्तमार्कण्डेये सद्यः शौचमथान्यैश्च त्र्यहमुक्तमशौचकामीति ।

अनुवाद – हे वीर ! विष, बन्धन, शस्त्र, जल, अग्नि और गिरने से मृत्यु होने पर तथा बालक, परिव्राजक, सन्यासी एवं देशान्तर में मृत्यु होने पर सद्यः शौच होता है ।

पत्रा 37 - 10 अध्याय समाप्त

तस्मात्स्वधर्मं नाहि संत्यजेत न हापयेच्चापि हि नात्मवंशम् ।
यः संत्यजेच्चापि निजं हि धर्मं तस्मै प्रकुप्येत दिवाकरस्तु ॥15.66

टीका . 19.67.

आत्मवंशम् एव हितान्यवश्यम् ।

टीका - स्वधर्मं प्रोक्तं वर्णाश्रमोथं आत्मनो हितान्यनुकूलानि आचर[illegible] हापयेत् न त्यजेत् अवश्यमितिमित्वसमितया पुराणं नियमयाति पुरुषे निजमसाधारणं तु शब्दो ह्यर्थौ हेतौ यस्माद्धेतोर्दिवाकरस्तस्मै प्रकुप्येत क्रुध्द्रुहेर्ष्यार्थानामिति चतुर्थी ।

अनुवाद - अतः स्वधर्म का न तो त्याग करे और न उसकी हानि होने दे तथा अपने वंश की हानि न होने दे । जो मनुष्य अपने धर्म का त्याग करता है उस पर दिवाकर (सूर्य) क्रोध करते हैं ।

यमस्य दक्षिणे पार्श्वे पालाशो दक्षिणोत्तरे ।
कृष्णोदुम्बरको रुद्राज्जातः श्लेष्मकरो वृषः ॥ 18.7.

टीका, 23.7.

यमस्य दक्षिणेतरे वामपार्श्वे कृष्ण उदुम्बरतरुः वृषो वृषभः श्लेष्मरोगनिर्गमं (?) करी कुर्वन् । 23.7.

हिन्दी अनुवाद – यमराज के दाहिने पार्श्व में पालाश और दक्षिणोत्तर (वाम) पार्श्व में कृष्ण उदुम्बर का वृक्ष उत्पन्न हुआ। रुद्र से उद्वेजक वृष (वासक – अडूसा) की उत्पत्ति हुई ।

पूजयेताथ कुसुमैः पादादारभ्य केशवम् ।
धूपयेद्विविधं धूपं येन स्याद्वत्सरं परम् ॥ 18.18.

हिन्दी अनुवाद - तदनन्तर पुष्पों के द्वारा चरण से आरम्भ केशव की पूजा करे एवं नाना प्रकार के धूपों से उन्हें धूपित करे जिससे सम्वत्सर पूर्ण हो ।

हिरण्यरत्नवासोभिः पूजयेत जगद्गुरुम् ।
रागखाण्डवचोष्याणि हविष्याणि निवेदयेत ॥ 18.19.

हि.अनुवाद - सुवर्णो रत्नों और वस्त्रों द्वारा जगद्गुरु का पूजन करे तथा राग-खाण्डव (मिष्टान्न विशेष), चोष्य एवं हविष्यों का नैवेद्य अर्पित करे ।

नमोऽस्तु ते पद्मनाभ पद्माधव महाद्युते
(is महाद्युते a misprint for महाद्युते ? 18. 21.

महाद्युत

हिन्दी अनुवाद - हे पद्मनाभ, हे लक्ष्मी के पति ! हे महाद्युतिमान्
आपको प्रणाम है । हमारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आप[illegible]

तत्रैको जलमध्यस्थो द्वितीयोऽप्यग्निपंचमी ।
करम्भश्चैव रम्भश्च यक्षं मालवटं प्रति ॥ 18.44.

(The construction is elliptical here. मालवटं प्रति — cf. at next. What is the meaning of अग्निपंचमी in the half)

हिन्दी अनुवाद — मालवट यक्ष के प्रति एकाग्र करम्भ और रम्भ इन दोनों में एक जल में स्थित होकर तथा दूसरा पञ्चाग्नि के मध्य बैठकर तप कर रहा था।

टीका श्लोक No. 23.7. संस्कृत टीका — तत्र तयोर्मध्ये करंभो जलस्थः रंभः पंचाग्निमध्यस्थः मालवटं नाम यक्षं प्रतिसंमुखं ।

समुन्नतः षड्भिरुदारवीर्यस्त्रिभिर्गभीरास्त्रिषु च प्रलम्बः ।
रक्तस्तथा पञ्चसु राजपुत्रः, कृष्णश्चतुर्भिस्त्रिभिरानतोऽपि ॥
द्वाभ्यां च शुक्लः सुरभिश्चतुर्भिः, दृश्यन्ति पद्मानि दशैव चास्य ।
वृतः स भर्ता भगवन् हि पूर्वं तं राजपुत्रं भुवि संविचिन्त्य ॥

टीका न. 28, 51, 52, 53, (पद्मयाँ कराभ्यां से प्रारम्भ .... विमोक्षस्व पर 5...

हिन्दी अनुवाद – वह महावीर्यवान राजपुत्र छः स्थानों से उन्नत, तीन से गम्भीर और तीन स्थानों से लम्बा पाँच स्थानों से लाल, चार स्थानों से काला और तीन स्थानों से नम्र है।

रामचन्द्र भट्ट कृत वामन पुराण की संस्कृत टीका के अनुसार 52 तथा 53 श्लोक का पूर्वार्ध इस प्रकार है।

ललाट, स्कन्ध, गण्ड, ग्रीवा, कटि, ऊरु — छः अंग उन्नत
नाभि, मध्य तथा जत्रु ये तीन अंग गम्भीर है.
दोनो भुजायें तथा अण्डकोष - ये तीन अंग प्रलम्ब,
दोनो नेत्र प्रान्त, अधर, हस्तद्वय, पादद्वय तथा नख - पांच रक्त हैं
केश, पक्ष्म और कनीनिका ये चार अंग कृष्ण हैं।
भ्रूद्वय, नेत्र प्रान्त द्वय, तथा कर्ण द्वय नम्र हैं,
दन्त तथा नेत्र दो अंग शुक्ल वर्ण के हैं।
केश, मुख तथा गण्ड द्वय ये चार अंग सुगन्धित

~~संस्कृत टीका~~ श्लोक पाठभेद पद्मां कराभ्यां दशनाश्च शुभ्राः, समुन्नतः षड्भिरुदारवीर्यः
51
त्रिभिर्गभीरास्त्रिषु च प्रलम्बो रक्तस्तथा पञ्चसु राजपुत्रः ।
भ... गर्वश्चपूर्वमु 52. कृष्णश्चतुर्भिस्त्रिभिरानतोऽपि द्वाभ्यां न शुक्लः सुरभिश्चतुर्भिर्वृतः स भर्ता ।
तं राजपुत्रं तु परं विचिन्त्य दत्स्व माँ नाथ तपस्विने स्मै ।
गुणोपपन्नं प्रवदन्ति संतो दातुं च मान्यस्य विभो क्षमस्व ॥ 53

संस्कृत टीका — पद्मां कराभ्यामिति सप्तम्यर्थे तृतीया पादयोः करयोश्चांगुल्य इति पूर्वेण योज्यम् शुभ्राः सिताः षड्भि ललाट ? गण्ड ग्रीवा कट्यूरुभिः समुन्नतः त्रिभिर्नाभिमध्यजत्रुभि गभीरः भुजयुग्म वृषणैस्त्रिभिः प्रलम्बः पंचस्वंगेषु नेत्रप्रांताधरहस्तद्वयपादयुग्मनखादिषु रक्तः । केश पक्ष्म कनीनिकादिभिः कृष्णः श्यामः त्रिभिर्भ्रूद्वयनेत्रप्रांतद्वय श्रवणयुगैरानतो नम्रः द्वाभ्यां दंतनेत्राभ्यां शुक्लः चतुर्भिः केशमुखगण्डयुगादिभिः सुरभिः सुगन्धिः 52, परमसत्पुरुषगुणलक्ष्मीवंतं हे नाथ स्वामिन् गुणैरुपपन्नं सपन्नं पात्रं दातुं योग्यं संतः प्रवदंति अतो हे विभो अस्मादत्यस्य दातुं मा क्षमस्व मा योग्यो भवेत् 53.

सापि जाता मुनिश्रेष्ठ सन्ध्या रागवती ततः ।
प्रतीच्छता कान्तिकायोगं शैले या विग्रहं दृढम् । २५.२०.

योऽसौ पीताम्बरधरः शङ्खधृक् मधुसूदनः ।
एतदीयो हि सौभाग्यो दत्तोऽस्मद्गोत्रमेव हि ॥ 21.54
टीका नं॰ 55.52.
संस्कृत टीका - यतस्यायमेतद्दीयः अस्माकं गोत्रे यद्वर्तते तत
दत्तम् ।

ततो गुमेन भगवांस्तद्रेतः स्कन्नमेव तु ।
जलं तृषान्ते वैयद्वत् तैलपानं पिपासितः ॥ २४:५०

Second line not clear.

टीका 51.56 56.51.

तृषार्तो - for तृषान्ते

टीका श्लोक differs. in second line.

जलं तृषार्तो वैयद्वत्पपौत हुताशनः)

संस्कृत टीका - स्कन्नं स्वस्थानाच्चलितं तृषार्तः पिपासितः ।

मालिनीसुरभिं ~~स्निग्ध~~श्लक्ष्णमुद्वर्तनं शुभम्
देव्यङ्गमुद्वर्तयते कराभ्यां कनकप्रभम् ।
तत्स्वेदं पार्वती चैव मेने कीदृग्गुणेन हि ॥ २८.५७
Third line differs .
तत्स्वेदं पार्वतीस्नेह एकी चक्रे गुणेनाहे, ~~मालिनी सुरभि~~
~~स्नेहं स्नानस्य कालात्~~ ।

टीका No. ~~५८-५९~~. 56. 58-59
तीन पंक्तियां ~~का~~ श्लोक टीका में चार पंक्तियां में उपलब्ध
58, 59, श्लोक नम्बर ।
संस्कृतटी० — सुरभिं सुगन्धं श्लक्ष्णमणीय उद्वर्तनं पिष्टं
देव्या अंगं देहं मुद्वर्तयते उत्साहयते कनकवत् प्रभावयस्य
तत् [58], तत्स्वेदं शरीरमुद्वर्तनोत्थितं मलं तत्पार्वती गुणेन
सूत्वादिनैकी चक्रे पिण्डी चक्रे आभिनकाले स्नानार्थं तूर्णं स्नेह-
मगमत् । [59] ⇒ पूर्ण श्लोक की टीका,

तयोरेवाहिता देवी शेखरं शुभ्रकेरवती ।
कृत्वा जगाम कौशिक्याः सकाशं भार्यया सह ॥ २१.४२.

टीका No. ~~४१.५७~~. 56.४।

[illegible]न्तर — त्रयोरेव हि सा देवी शेखरं स्वकरे चतम् ।
कृत्वा जगाम कौशिक्याः सकाशं समये कृते ॥

कृत टी॰ — तयोश्चण्डमुण्डयोः तं शेखरं शिरोरूपं स्वाभिन करे कृत्वा दायकौशिक्याः सकाशं निकटं जगाम ।

अनाख्यायैव ते वीरास्त्वन्धकं महिमादयः ।
स्वपरिग्रहसंयुक्ता भूमिं युद्धाय निर्ययुः ॥ 32.47.
(Second line not clear)

टीका नं० 62. 22-23 (क्र.सं. का एक श्लोक टीका के दो श्लो
में विभाजित 22-23 नं०) (अनाख्यायैव . . . . . निर्ययु

संस्कृत टीका - अनाख्याय अकथयित्वान्धकं निर्युर्निश्चक्रमुः ज्वा
स्वैरात्मीयैः परिग्रहैः परिवारैः संयुक्ताः ।

श्लोक पाठान्तर -
अनाख्यायैव ते वीरा अन्धकं निर्ययुर्जवात - 22.
स्वपरिग्रह संयुक्ता भूमौ युद्धाय निर्ययुः - 23

श्रुत्वा तद्वचनं स्कन्दो मयूरं प्रोह्य वेगवान् ।
प्रदक्षिणं पादचारी कर्तुं तूर्णं तरोऽभ्यगात् ॥ 32.102.
शक्रोऽवतीर्य नागेन्द्रात् पादेनाथ प्रदक्षिणम् ।
कृत्वा तस्थौ गुहोऽभ्येत्य ब्रूहि किं संस्थितो भवान् ॥ 32.103.

टीका नं॰ 62. 79-80. पत्रा 224.

Sloka differs.

श्रुत्वा तद्वचनं स्कन्दो मयूरं त्यज्य वेगवान् ।
प्रदक्षिणं पादचारी कर्तुं तूर्णं तरोऽभ्यगात् ॥
शक्रोऽवतीर्य नागेन्द्रात् पादेनाथ प्रदक्षिणम्
कृत्वास्याध्यान्वयात्पूर्वं कुमारः शक्रमब्रवीत् ॥

संस्कृतटीका — त्यज्य त्यक्त्वा पादचारी पदातिः तूर्णं तरोतित्वारितः । 79.
नागेन्द्रादैरावणात् अवतीर्य अवरुह्य अस्य कुमारस्य ?
इत्याद्यायौ पूर्वं प्रथमं प्रदक्षिणं कृत्वा कुमारः शक्रं ____ ? पूर्वं कृतमित्यब्रवीत
80.

कथं शुक्लं कथं शान्तमप्रतर्क्यमनिन्दितम् ।
कान्यस्य द्वादशैवोक्ता पत्रका तानि मे वद ॥ 34.66.

टीका No. 65. 66. पत्रा - 233.
Sloka differs in second line.

काश्चास्य द्वादशैवोक्ताः पात्रिकास्ताश्च मां वद ।

संकेत टीका - शान्तत्वादि प्रोक्तविशेषणविशिष्ट ब्रह्मजिज्ञासया प्रश्नः कथमिति अनिन्दितं निन्दानिबन्धनैर्जात्यादिभिर्हीनत्वाद् दृश्यमिति यावत् पात्रिकाश्च क्रमागाः ।

साङ्ख्यवेत्तारमपदं कपिलं वोढुमासुरिम् ।
दृष्ट्वा पञ्चशिखं श्रेष्ठं योगयुक्तं तपोनिधिम् ॥
ज्ञानयोगं न ते दद्युर्ज्यायांसोऽपि कनीयसाम् ।
संयुक्तं महायोगं कपिलादीनुपासतः ॥ ३५.७१-७२.

टीका नं० ६५. ७१-७२ पत्रा - २३३.

sloka differs. तथा for दृष्ट्वा
ज्यायसो for ज्यायांसो,

संस्कृत टीका - सांख्यप्रवर्तकं पुत्रचतुष्टयमाह सांख्यस्य पंचविंशति-तत्वनिर्णयकस्य शास्त्रस्य नेतारं उपदेष्टारं कपिलादिकं पुत्रचतुष्टयमभवत् श्रेष्ठं सर्वयोगे ज्ञानात्मके युक्तम वाहितं तत्साधनभूतस्य तपसो निधिं शेवधिं नित्यतपोनिष्ठमिति चतुर्णामपि विशेषणकलापो योज्यः । ७१

ते ज्यायसः कपिलादयः कनीयसां सनत्कुमारादीनां ज्ञानयोगं तदुपायभूतं कर्म न दद्युर्नोपदिदिशुः तेऽपि सनत्कुमारादयः कपिलादीनुपासतोऽपि सेवमानानपि योगं नोपादिष्टवन्तः ज्ञानस्य साधनभूतत्वात् कर्मयोगस्य महत्वम् तच्च मानेन उपमानेन युक्तं निरुपम-मिति यावत् । ७२.

तया च रक्षा कपिना कृता भीरु।निरन्तरैः।
लतापाशैर्मिह यन्त्रमध्यस्ताद् दुष्टबुद्धिना ॥ 38.37.

कपिना यत्कृतं सर्वं लतापाशं चतुर्दिशम् ।
पञ्चवर्षशते काले गते, शक्रस्तदा शरैः ॥ ३४·७।.

न चोन्मोचयितुं वृक्षाच्छक्यामो ऽपि यत्नतः ।
तद्दत्तेन नरेन्द्रेण त्रिधा कृत्वा तु शाखिनः ॥ ३९.१६.

गणान् सनन्दीन् वृषभध्वजांस्तान्
धाराभिरेवाम्बुधरास्तु शैलान् 42.50
तेषामापततां वेगः प्रमथानां बलेबभौ ।
आपगानां महावेगे पतन्तीनां महार्णवे ॥ 43.23

ततोऽभवच्छैलपृष्ठं प्रावृडभ्रसमप्रभैः ।
आवृतं वर्जितं सर्वैः प्रभयैरभैरपि ॥ 43.62.

शूलपाणेस्ततः स्थित्वा रूपं विह्लायित्वन्ततः ।
अन्विवेश ततो ब्रह्मन्नोभौ पार्श्वास्थितौ वृषौ ।
(Is the construction ellyptical here) 43. 89-90.

भवांस्त्रिदेवास्त्रियुगास्त्रिधर्मा
त्रिपुष्करश्चासि विभोत्रिनेत्र ।
त्रय्यारुणीस्त्रिश्रुतिरव्ययात्मन
पुनीहि मां त्वां शरणं गतोऽस्मि ॥ 44.56

कृतं महत् शङ्कर तेऽपराधं
मया महाभूतपते गिरीश ।
कामारिणा निर्जितमानसेन
प्रसादये त्वां शिरसा नतोऽस्मि ॥ 44.58.

संरम्भाद्धानवेन्द्रो विमृदितदितिजैः संयुतो देवसैन्यं
सेन्द्रं सार्कं सचन्द्रं करचरणनखैरस्त्रहीनोऽपि वेगात् ।
चक्रे वैश्वानराभैस्त्ववनिगगनचोहितर्यगूर्ध्वं समन्तात्
प्राप्तेऽन्ते कालवह्निर्जगदखिलमिदं रूपमासीद दिवसो:

47

कृतं महत् शङ्कर तेऽपराधं
मया महाभूतपते गिरीश ।
कामारिणा निर्जितमानसेन
प्रसादये त्वां शिरसा नतोऽस्मि ॥ 44.58.

टीका रामचन्द्रभट्ट कृत   इति वामन पुराणे हरलालिते प्रथमोऽध्यायः।

1, वा. पुराण, पत्रा 9. A. (Critical Edition अध्याय 2, श्लोक 32) Same number in the Tika also.
अकारि कांकिचिद् चेतयंत्रं ब्रह्मणः पंचमो मुखः पंचमं मुखं ~~पुंस्यमार्ष~~
पुंस्यमार्ष 32.

2 तच्छिन्नं शंकरस्यैव सव्ये करतलेऽपतत्
पतते न कदाचिच्च तच्छंकरकराच्छिरः। Cri. Edn 2.37.
टीका

ताच्छिन्नं शंकरस्यैव सव्येकरतलेपतत्।
पतते न कदाचिच्च तदाकरतलाच्छिरः॥ टीका, 2.38.

टीका Note. ताच्छिरः। छिन्नं द्विधाभूत न पतते न वियुक्तो भवति,
आत्मनेपदमार्षम्।

3 Derivation of वामन - according to रामचन्द्रभट्ट।
वमति मायोपाधि ग्रहण क्रमेण आकाशादिकं तस्मादुद्गिरतीति वामनः वमयति
सर्वाणि भुवनि शुभाशुभेषु कर्मस्वंतर्यामित्वान्नियमयति वा सर्वोत्प्रको
प्राणापानौ ऊर्ध्वाधः प्रेरयति वेति। 3.22. पत्रा 14.

4 तानस्त्रान्वासुदेवेन प्राक्षिप्तान् गणनायकः।
वारयामास शूलेन गदया मार्गणैस्तथा॥ Cr. Ed. 4.45.
टीका श्लोक No. 4.53.
तान् अस्त्रान् अस्त्राणि नपुंसताभाव आर्षः। 4.53. टीका 16.

5 5.37, Cr. Ed. 5.37. टीका,
चित्रांश ... उदाहृता, — टीका — विशाखाया अंशकत्रयं पाद-
त्रितयं सन्धिरार्षः तुलानामराशीतोभिः कालस्य द्वितीयं शुक्रस्य
सदनं क्षेत्रं ——

6 6.12. Cr. Ed. 7.12. टीका, वनानि कर्णिकाराणां .... भवनानि वै।
टीका — पुष्पितानिविकासितानि कानि यथा नरेन्द्र पुत्राणि कनकाभरण
स्वर्ण भूषाणि नपुंसकमार्षम्

7 Not found in Cr. Ed. 8.29. टीका — पुलस्त्य उवाच ..... वचनं बभाषे।
पुलस्त्य उवाच इत्येवमुक्तोवृषभध्वजेन यक्षः ~~प्रतीच्छन्~~ संविजृंभणादीन तोषं जगाम
ततस्त्रिशूली तुष्टस्तदैनं वचनं बभाषे।
टीका — प्रतीच्छत् प्रत्यैच्छत् अडागमाभाव आर्षः।

→ पत्रा - 30 में आर्ष प्रयोग लेकिन वह श्लोक Cr. Ed. में नहीं है।

8 Cr. Ed. ततश्चचाल पृथिवी गिरयः सरितो नगाः।
पातालभुवनाः सर्वे जङ्गमाजङ्गमैर्वृताः ॥ 6.69.

टीका - ततश्चचाल पृथिवी गिरयः सरितो नगाः।
पातालभुवनाः सर्वे जंगमाजंगमाश्रिताः ॥ 8.47.

संस्कृतटीका - नगा वृक्षाः जंगमाजंगमैश्चराचरैराश्रिताः सर्वे पातालाद यो भुवना
भुवनानि पुंस्त्वमार्षम्।

9. Cr. Ed. 6.77. टीका 8.56. विष्णुः पितामह. . . . . प्रचक्रतुः।
संस्कृत टीका - हरस्य लिंगं समेत्य संगम्य प्रचक्रतुः प्रचक्रमतुः वर्णलोप आर्षः

10 Cr. Ed. 7.18. टीका 9.18. इयंमभोह . . . . . वासवाय च।
संस्कृतटीका - हे अप्सरसः विसर्गलोप आर्षः

11. Cr. Ed. 7.23. टीका 10.2.
The Śloka in the Manuscript reads
तस्मिन्छासति दैत्येन्द्रे देव ब्राह्मण पूजके।
मखानि भुवि राजानो यजं ति विधिवत्तदा ॥
संस्कृतटीका - शासति रक्षति मखानि यज्ञाः क्लीवत्वमार्षम् राजान
क्षत्रियाः।

12 Cr. Ed. 7.57. टीका 10.36. - सप्तर्षिमुख्यो हि . . . नराय विप्र।
संस्कृत टीका - ऋषिः ऋषिमुख्यो मुनिश्रेष्ठो नरः द्विचतुरष्टौ षड्द्वीपा
जद्वीपानि यकं च दश क्लीवत्वमार्षम्

13. Cr. Ed. 8.15. टीका 11.15. अपास्य तद्वनु . . . . . शासन
संस्कृतटीका, अस्य अपास्य अपाक्षिप्य अपवर्ज्य ? अधि दृ दा
ज्यायत्रोति शाकपार्थिवादित्वान्मध्यपदलोपी समासः।

14 Cr. Ed. 8.38. टीका 11.29 श्लोक - ततो दैत्यपतिं विष्णुः . . . . इत्यब्रवीत्
संस्कृतटीका - पीतवासाः पीताम्बरः अब्रवीत् संधिरार्षः।
40 पत्रा तक पढ़ा है

15. Cr. Ed. 15.67. टीका 19.68. श्लोक - इत्येवमुक्तो . . . . अवेक्ष्यमाणः।
संस्कृत टीका - स सुकेशी उत्पत्य ऊर्ध्वमारुह्य सौजदाशार चीराम -
इत्यत्र वृद्धिर्न दग्धा गुण इति गुणः संधिरार्षः अवेक्ष्यमा
प्रतिजागरन . . .

16 See notes on Śloka 9.20. 'उग्रजवानि तीक्ष्णवेगानि अविलम्बितानि'

17. Cr. Ed. 9.21. टीका 12.21. 'कुम्भरथ्या .... आश्विनौ'।
संस्कृत टीका - सार्धसाहस्रं पंचदशशतकं हंसावाहनं रथ्ये योजितं विभक्ति लुप्तार्ष: आदित्या हरय: सादिन इत्यर्थ: रथवाहा हरय आदित्यानां वाहनान्यश्वान् ।

18 Cr. Ed. 9.46. टीका 12.46. 'समापतन् ..... समुद्धताल्'
संस्कृत टी० - प्रतीच्छत प्रत्यैच्छत प्रत्यगृह्णा द्रोणे अडभावआर्ष: तुरगाणां मध्ये केशरकं शोभितं योजितं वा।

19 Cr. Ed. Sloka No 9,48 - 49, श्लोक 48 की अन्तिम पंक्ति से शुरु हो कर 49 श्लोक की तीसरी पंक्ति तक है।
टीका श्लोक, - इन्द्रं समास्थाय ------ - सहस्रश:
टीका No. 12.49.
संस्कृत टीका - अन्योन्यं उपेत्य संगम्य अगर्जन् अडभावआर्ष: चापानि धनूंषि।

20 Cr. Ed. 12.5.
सुहृत्सम्पाति सोदर्य स्वामि भृत्य पितासुतान् ।
याज्योपाध्याय योर्यैश्च कृतो भेदोऽधर्मैर्मिथ: ॥
टीका. 16.5
सौहार्द संप्राति सोदर्य स्वामि भृत्य पितासुतान् ।
याज्याध्यापकयोर्यैश्च कृतो भेदोह्यधर्मत: ॥
संस्कृत टीका - सौहार्दं प्रीति मैत्री प्राप्नोति सोदर्यादीनां द्वन्द्व: पितेत्यत्रानङ् तो द्वन्द्व इत्यात्व. सोदर्यादीनां षष्ठ्यर्थे द्वितीया है याज्यो यजमान: भेदोन्योन्यं वैर: है

21 Cr. Ed. 12.23.
टीका. 16.23 श्लोक differs
टीका - प्रपादेवकुलारामविप्रवेश्मसभामठान् ।
कूपवापीतडागांश्च भंक्त्वा विध्वंसयंति ये ॥
संस्कृत टीका - प्रपापुष्करिणी (जलधानी) देवकुलं आयतनं आराम उपवन विप्राणां वेश्म गृहं सभा सामाजिक गृहं मठ: छात्रादिगृहं प्रपादीनां द्वन्द्व: कूपा अन्धव: वापी- दीर्घिका तडाक: पद्माकर: द्वन्द्व: भंक्त्वा उत्पाट्य विध्वंसयंति ह

22 Cr. Ed. 12.44-45
टीका में 44 का अन्तिम आधा और 45 का पहला आधा मिला के टीका का श्लोक बना है.
टीका श्लोक नम्बर 16.44.
टीका - महोरगाणां ....हयाङिप्रभक्तः।

संस्कृत टीका - महोरगाणां महानागानां अनंतः शेषः भूतेषु व्यावादिषु मध्यात् निर्धारणे सप्तमी।

23 Cr. Ed. 14.36 (टीका में 36 की दूसरी पांती धेनुं सवत्सां से प्रारम्भ होकर श्लोक 37 श्लोक की प्रथम पांती शोभनानि पर समाप्त होता है।
टीका No. 18.35.
संस्कृत टीका - धेनुं नवसूतिकां गाँ स्वस्तिकमासन्दीं अंजनं नेत्रयः मधुमाक्षिकं ब्राह्मणं च विभक्तिलोप आर्जः श्वेतानि सितवर्णानि।

The Sloka differs -
धेनुं सवत्सां वृषभं सुवर्णम्
मृद् गोमयं स्वस्तिकमंजनानि।
लाजा मधु ब्राह्मण कन्यकांच
श्वेतानि पुष्पाणि च शोभनानि॥

24 Cr. Ed. 15.26.
टीका 19.26 { सुकेशीरुवाच
भवद्भिः.... लक्षणानि हि।

संस्कृत टीका - भवद्भिरिति कीर्तिता अभोज्याः सन्धिरार्जः एतेभ्योमन्नं भोक्तुमयोग्यामित्यर्थः भोजयितुमयोग्या वा।

25 Cr. Ed. 15.67. { टीका श्लोक differs.
टीका 19.68. इत्येवमुक्तो मुनिभिः सुकेशीः प्रणम्य तान् ब्राह्मणान्.

संस्कृत टीका - स सुकेशी उत्पत्य ऊर्ध्वमारुह्य सैजदाद्वार थीरामइत्यत्र वृद्धिवदत्रा द्गुणइतिगुणः संधिर्वार्जः अवेक्ष्यमाणः प्रतिजाग्रन् —

26. Cr. Ed. 17.1.
टीका 21.1.
संस्कृत टी० - यानेतानि ते कामिभिः काम्य कर्म प्रवृत्तैः अशून्यशयनादीनि व्रतानि देवाभ्यां हरीशाभ्यां देवयोर्हरिशयो षष्ठ्यर्थे तृतीया
पेंसिल मार्जिन

संरम्भाद्दानवेन्द्रो विमृदितदितिजैः संयुतो देवसैन्यं
सेन्द्रं सार्कं सचन्द्रं करचरणनखैरस्त्रहीनोऽपि वेगात् ।
चक्रे वैश्वानराभैस्त्व वनिगगन चोदितैर्यगूढवं समन्तात्
प्राप्तेऽन्ते कालवह्नेर्जगदखिलमिदं रूपमासीद् दिदासोः 47

सोऽप्येनं प्रसमीक्ष्य दैत्यविटपप्रच्छेदनं मानिनं
प्रोवाचाच विहस्य तं च सुचिरं मेघस्वनो दानवः ॥
47.42.

41.42. ~~[illegible]~~ पत्रा 308 पाठभेद - विटपि for विटप
प्रच्छेदिनं for प्रच्छेदनं ।

टीका (शतशीर्षं शताशिरसं उद्यतागदायेन शैलेन्द्रस्य
[illegible]वराकृति शकोराचस्य अपास्य त्यक्त्वा) सौम्येन भुवेन
विष्णुप्रसमीक्ष्य विलोक्य तं विशिनाष्टि दैत्याएव विटपिनो
वृक्षा स्तेषां प्रकर्षेण छेदिनं मानिनं मानयुक्तं मानः
रुजा मेघवत्स्वनो हहास गर्जितिचास्य स दानवः प्रोवाच ।

तथा विबाहुर्विशीरा मुण्डतालो यथा वने ।
तस्थौ मेरुरिवाकम्प्यः कबन्धः क्ष्माधरेश्वरः ॥ 47.49.
(explanation of the ~~unlined~~ underlined words.)

टीका 89.52 पत्रा 309
कबन्धोदानवेश्वरः for कबन्धः क्ष्माधरेश्वरः ।
संस्कृतटी० - विबाहुः भुजद्वयहीनः विशीरा शिरोहीनः मुण्डः छिन्नस्कन्धः तालवृक्षः सेतुरिवाकंपस्तस्थौ कबन्धोपमूर्धो देहः ।
(बाहुशीरश्च प्रणष्टायस्यतं बलात्तमसुरं कुलिशेनाम्बराद्भूमौ शक्रः) पातयामास तथा. - ~~the~~ टीका of verse No. 53. according to टीका. (the following verse of 47.49.)

स भूमिं च तथा नाकं राज्यं लक्ष्मीं यशोऽव्ययः ।
समाहरिष्यति बलेः क्रतुः सद्धर्मगोचरम् ॥ ५१.४.

सुराङ्गणाः शक्रमवेक्ष्य दीनं
पराजितं दानवनायकेन ।
सितेऽङ्च पक्षे मकर्क्षगेऽर्के
धृतार्चिताः स्यादथ सप्तमेऽह्नि ॥ 50. 31.

स भूमिं च तथा नाकं राज्यं लक्ष्मीं यशोऽव्ययः ।
समाहरिष्यति बलेः कर्तुः सद्धर्मगोचरम् ॥ ५१.४.

सुरारणिः शक्रमवेक्ष्य दीनं
पराजितं दानवनामकेन ।
सितेऽङ्च पक्षे मकर्क्षगेऽर्के
घृतार्चिभिः स्यादय सप्तमेऽह्नि ॥ ५०. ३१.

हृतानि वस्तेन बले ते जौंसीति अतिर्गम ।
नालं तगो विभाहितुं स्थातुं सूर्योदयं बले ॥ 51.18.

इतः सहस्रैर्बहुयोजनाख्यै-

लोको महर्नाम महर्षिजुष्टः ।

येषां हि इष्ट्याऽर्पणचोदितेन

हृ दह्यान्ति दैत्याः सहस्रोक्षितेन ॥ ५२.२१.

ततोऽपरो योजनकोटिना वै
लोको जनो नाम वसन्ति यत्र ।
गोमातरोऽस्मासु विनाशकारि ।
यासां रजोऽपीह महासुरेन्द्र ॥ 52. 22.

धुन्धुर्नामासुरपतिर्बलवान् वरबृंहितः ।
सर्वान् सुरान् विनिर्जित्य त्रैलोक्यमहरद् बलि: ॥ 52.46.

क्रमत्रयं तावदवेक्ष्य दत्तं
महासुरेन्द्रेण विभुर्यशस्वी ।
चक्रे ततो लङ्घयितुं त्रिलोकीं
त्रिविक्रमं रूपमनन्तशक्तिः ॥ 52.42.

ततः संगमतोयेन वारिधानी दृढां नवाम् ।
संपूर्णां वस्तुसंवीतां छत्रोपानहसंयुताम् ॥ 53.53.
(What does संवीताम् mean here? Is the constructi[on]
of the verse not elliptical?)
टीका 95.52. पन्ना 331.

पाठ भेद — ततः संगमतोयेन वारिपात्रं दृढं नवम् ।
संपूर्णं वस्त्र संवीतं छत्रोपानह संयुतम् ॥

संस्कृत टीका — मद्योः संगमस्य तोयेन संपूर्णं वस्त्रेण संवीतं अवगुण्ठितं
छत्रं आतपत्रं उपानहः पादत्राणाभ्यां संयुतं ।

प्रदक्षिणीकृत्य पुरीं पूज्याविमुक्तकेशवौ ।
लोलं दिवाकरं दृष्ट्वा ततो मधुवनं ययौ ॥ 57.31.

टीका 100. 31.

विश्वेश्वरं for मधुवनं.

कृत टीका - पुरीं वाराणसीं अविमुक्तं महादेवकेशवं च तौ ।

नागेन्द्र देह शयनासन सुप्रियाय
गोक्षीर हेम शुक नील घनोपमाय ।
पीताम्बराय मधुकैटभनाशनाय
विश्वाय चारुमुकुटाय नमोऽजराय ॥ 58.40

(In the second line Visnu is said to be शुकोपम नीलघनोपम while the first two are dark the last are not. How should we have the सङ्गति here..?)

टीका 101.41 पत्रा 35।

संस्कृत टीका – नागेन्द्रस्य शेषस्य देहे शयनमासनं च तत्सु अतिशयेन प्रियं यस्य गोक्षीरादीनां वर्णाक्षेपकाणां द्वन्द्वः गोक्षीरोपमः सितः हेमोपमो रक्तः शुकोपमः नीलश्चनोपमश्च स्ववशतया काल-परिणामानुसारेण युगेषु गृहीत तत्तद्वर्णयुक्तमूर्तिः तस्मै पीताम्बराय गौरवस्त्राय मधुकैटभौ रजस्तमो रूपौ नशयति यस्तस्मै विश्वाय व्यापकाय विष्णुव्याप्तौ चारु रवचित्रै नाना वर्णरत्नैर्द्युतमयूरवयुक्तत्वात् द्युमद्देदीप्यमानं मुकुटं यस्य अजराय परिणामशून्यत्वात् ।

एवमुक्त्वा हृषीकेशो गजेन्द्रं गरुडध्वजः ।
स्पर्शयामास हस्तेन गजं गन्धर्वमेव च ॥ 58.73.

इत्थं स्तुतो जगन्नाथः सर्वात्मा सर्वगो हरः।
प्रोवाच भगवान् भक्तं कुरुपनयनं विभो ॥ ६२.५२.

सं कीर्तनात् स्मरणा दर्शनाच्च
संस्पर्शनादेव च देवतायाः ।
धर्मार्थकामाद्यपवर्गमेव
लभन्ति देवा मनुजाः ससाध्याः ॥ 63.46.

प्रमाणहीनां स्वयमेव कृत्वा
वसुंधरां माधव पद्भ्यां मम।
विष्णो न बध्नासि बलिं न दूरे
प्रभुर्यदेवेच्छति तत्करोति॥ 65.45.

(Mark the explanation of the third line more care[fully])

टीका, अष्टमोध्याय (actually it is 108 अध्याय.) पत्रा 386-38[7]
108. 48.49.

विष्णो नु बध्नासि for विष्णो न बध्नासि
तत्करोतु for तत्करोति

संस्कृतटीका — तदाह त्वमेकेनैव पदेन सर्वं जगल्लंघायेत आत्ममि[त] शत्रुः भर्ता हे लोकनाथ त्वमेतां लीलां क्रमत्रयेण जगदाक्रांतिरूपां कृतवान् स्वयमेव हीनं वामनं प्रमाणं रूपं कृत्वा पदत्रययाचना छलेन महत्प्रमाणेन वसुंधरां भूमिं आक्रांतवानसीति शेषः पत्रय सर्वकर्तुरेतव लीलैव न तूपालंभो या। 48.
अतो हे विष्णो बलिं कथं वाक्छलेनानुबध्नासि अनुरुणत्सि यद्वा बलिं नु किं बध्नासि स च बलिर्न दूरे सर्वव्यापकस्यतव हस्तगतस्[य] बलि शब्दो द्वितीयांतः प्रथमांतोपियोज्यः तथा न शब्दस्थाने नु शब्दपाठान्तरं स च किमर्थं अस्माभिर्युक्तेभिहिते कृतेपि सति - प्रभुः प्रभवितुं समर्थः स्वामी यदेवेच्छति तत्कुरुते नान्यत् प्रभूणां स्वेच्छाधीनत्वात् 49.

संकीर्तनात्स्मरणाद्दर्शनाच्च
संस्पर्शनादेव च देवतायाः ।
धर्मार्थकामाद्यपवर्गमेव
लभन्ति देवा मनुजाः ससाध्याः ॥ 63.46.

प्रमाणहीनां स्वयमेव कृत्वा
वसुंधरां माधव पद्मनाभ ।
विष्णो न बध्नासि बलिं न दूरे
प्रभुर्यदेवेच्छति तत्करोति ॥ 65.45.
(Mark the explanation of the third line more care[fully])

टीका, अष्टमोध्याय (actually it is 108. अध्याय.) पत्रा 386-38[7]
108. 48.49.

विष्णो नु बध्नासि for विष्णो न बध्नासि
तत्करोतु for तत्करोति
संस्कृतटीका — तदाह त्वमेकेनैव पदेन सर्वं जगद्व्यापयेत् अमितं
शत्रुः मतो हे लोकनाथ त्वमेतां लीलां क्रमत्रयेण जगदाक्रांतिरूपां
कृतवान् स्वयमेव हीनं वामनं प्रमाणं रूपं कृत्वा पदत्रययाचना
च्छलेन महताप्रमाणेन वसुंधरां भूमिं आक्रांतवानसीति शेषः यत्त्रय
सर्वं कर्तुं एतवलीलैव न तूपालंभो या । 48.
अतो हे विष्णो बलिं कथं वाक्छलेनानुबध्नासि अनुरुणत्सि यद्वा
बलिं नु किं बध्नासि स च बलिर्न दूरे सर्वव्यापकत्यतव हस्तगतस्व
बलि शब्दो द्वितीयांतः प्रथमांतोपियोज्यः तथा न शब्दस्थाने
नु शब्दपाठान्तरं स च किमर्थं अस्माभि युक्तेभिहिते कृतेपिसति -
प्रभुः प्रभवितुं समर्थः स्वामीयदेवेच्छति तत्कुरुते नान्यत् प्रभूणां
स्वेच्छाधीनत्वात् 49.

विभूतिभिः केशवस्य केशवाराधने रतः ।
नानाधातुविकारैश्च पञ्चवर्णैश्च चित्रकैः ॥ 68.45.

स एवमास्ते ऽसुरराड् बलिस्तु
समर्चयन् वै हरि ~~माजीवाके~~ पादपङ्कजौ ।
तस्मात् नित्यं हरिमाजीतानि
स तस्य जातो विनयाङ्कशस्तु ॥ 68.63.

दुर्भिक्षसंपीडितपुत्रभार्या
यामी सदा पोषणतत्परे च ।
देवाग्निविप्रार्चिरते च पित्रोः
शुश्रूषके भ्रातरि ज्येष्ठसाम्ने ॥
दत्तेफलं तत्प्रवदन्ति देवाः
स तत्फलं लभते पाठ्य पाठात् ॥ 69.10.

टीका ।।4. 8÷9.पत्रा 404.

संस्कृतटीका — दुर्भिक्षेण संपीडिताः क्षुधावसन्नाः पुत्रादयो यस्य तस्मिन् विप्रवरे अन्नदानेन यत्फलं लभेत् ज्ञातीन् ज्ञातीनां षष्ठ्यर्थे द्वितीया पोषणे रक्षणे तत्परे आसक्ते देवा यत्फलं प्रवदंति । 8.

देवादिसुरते शुश्रूषणपरे पित्रो शुश्रूषके सेवके भ्रातरि भ्रातुः षष्ठ्यर्थे सप्तमी ज्येष्ठस्य साध्वोश्चेति विशेषणसमासः लभेत् लभ्येत ।





27. Cr. Ed. 19.17. { श्लोक "गन्धर्वराजो . . . . पुष्पामृत्व
टीका No. 25. 17. { स्रजं च ।

संस्कृत टीका - गन्धर्वराजस्तु ? रजतेन कनकेनानु निर्मितं सह
योग्यभाजनं पात्रं पानस्य पूर्ण चषकं पूरणपुणेत्यादिनो षष्ठी स
निबेधः भुजंगहारं भुजंगोद्भवं मुक्ताहारं . . . .

28 Cr. Ed. 22. 24. { श्लोक - केयं प्रोक्ता . . . . . प्रयत्नत.
टीका. 28. 24 पत्रा 102 { 'पितरो दैव्याः' टीका में 'पितरो देवपूज्या इमामिः

संस्कृत टीका - तिथीनां मध्यात् उत्तमातिथिः हे देव प्रयत्नतः श्रद्धादिव्व
वहिततया सन्धिरार्षः ।

29. Cr. Ed. 22.31.
टीका 28.30. { ततस्तु कौतुकाविष्टः . . . . वनम् ।

संस्कृत टीका - सर्वाभूतूनां वसंतादीनां समवायेन स्थिता निकुसुमानि
यस्मिन् आविष्टोनवनः सुहितार्थे षष्ठीसमास निबेधः ।

30 Cr. Ed. 23. 18. { श्लोक, वेद यो लोकनाथस्य पंचमधर्मस्य सेवित
टीका, No. 29. 18. { सेविता [illegible] सेतवः . . . . . शंभुना ।

संस्कृतटीका - लोकनाथस्य ब्रह्मणः धर्मस्य धर्मेण सेविता या सुवेदिषु -
यष्टं यज्ञोविहित: अगुणत्वात्संप्रसारणाभाव आर्षः ।

31. Cr. Ed. सं.मा. 1.14. { श्लोक, आरंतुकारंतु [illegible] तरन्तुकारन्तु
टीका 30.14 { तरन्तुकारन्तु . . . . . वेदिरुच्यते ।

संस्कृतटीका - अस्य प्रमाणं वदन्नुपसंहरति आ आभिव्याप्य रंतुकमारंतुकं
चोभे तीर्थे तयोरंतरं मध्यस्थानं यच्चचतुर्मुखं चतुष्पबाहं यदन्तरं
एभहस्त्राद्राभहदस्य पतत्कुरुक्षेत्रं विभक्तिलोपआर्षः पितामहस्य
ब्रह्मणः स्यमंत्रपंचकं उत्तरवेदिरुच्यते ।

32. Cr. Ed. सं.मा. 12.21. This Sloka [illegible] Cr. Ed.
टीका 33.26. पत्रा 117. { तव प्रसादाद्देवेन्द्र मुक्तो भवति किल्बिषैः
{ सिद्धिं मयाभिलाषिता संसारे च भवाम्यहम्

टीका - . . . संहारं पर्वाहं भवानि प्राप्नुयां परस्मैपदमार्षम्

Cr. Ed. सौ. मा. 14.36. { ब्रह्मावर्तं नरः स्नात्वा . . . स्वेच्छया।
टीका, 34. 36 पत्रा 122 {

टीका – ब्रह्मज्ञानेन समन्वितो भवति आत्मनेपदमार्षं स्वेच्छया च प्राणान् मुंचतीत्यनेन जितमृत्युर्भवतीति सूचितम्।

Cr. Ed. सौ० मा? 14.51 (टी० श्लोक differs
टीका 34.47. { पुराकृष्णमृगास्तत्र व्याधै र्मार्गणपीडिताः वगाह्यतास्मिन् सरसि . . . . . . ॥

टीका – वगाह्य अवगाह्य भागुरिमतेनोपसर्गाद्याक्षरलोपः।

35 Cr. Ed. सौ. मा. 17. 3. { तत्रागताअप्सरसो . . . .
टीका, 37. 3. पत्रा 130. { . . . निन्दिता।

संस्कृत टीका – प्रियमपीच्यदर्शनं यासां आसेचनकदर्शनाइत्यर्थः यतो रुचिरा सुन्दर्यः स्निग्धाः सुकुमाराः स्नांयंति स्नांति यगार्षः अनिन्दिता निन्दाशून्या।

The Sloka differs in first line

तत्रागताअप्सरसोरंभाद्या प्रियदर्शना।

36

Cr. Ed. सौ. मा. 17. 15-16. (Second line of the 15th sloka and first line of 16th sloka. अंगुल्यग्रेण . . . . सांनिभम्।
टीका. 37. 17. पत्रा 131.

संस्कृत टीका – ताडयद ताडयत अडभावआर्षः भवः सत्ता प्रकाशः शिवः तस्य देवस्य हिमेन तन्निभं सदृशं भस्म।

Cr. Ed. 19.40 { श्लोक – शोधयित्वा . . . . तत्रकल्पयन्।
टीका 39.40 { वही पाठ

संस्कृत टीका – शोधयित्वा निर्मलीकृत्य सरस्वत्यरुणयोः संगमं संभेदं कल्पयन्नकल्पयन् अडभावआर्षः।

38

~~Fault of all~~. Cr. Ed. 20.24-25. (~~First~~ Second line of 24[15] and first line of 25[15] यत्रपूर्वे...
~~Cr. Ed.~~

टीका, 40. 22. पत्रा 138. ...... पद्मनाभोत्तरे स्थित ।

संस्कृत टीका – पद्मनाभ उत्तरे सन्धिरार्षः ।

39 Cr. Ed. सौ.मा. 22.63.
टीका 42.64 पत्रा 146.
{ शृण्वंति बहवो यत्र तत्र तन्तु विधते, तस्य व्रतस्य सुभग इति मत्वा गमिष्यथ ।

संस्कृत टीका – हे सुभगाः सुंदर्यः तस्य ~~व्रतस्य मत्वा~~ व्रतस्य मत्वा ज्ञात्वा रुक्मिणी षष्ठी इति प्रकाशार्थः ।

40 Cr. Ed. सौ.मा. 22.75. टीका 42.77: क्रूरकर्मणः १०४ क्रूर चोष्टितम् । पत्रा 147.
टीका क्रूरकर्मणः क्रूरकर्माणः सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इति दीर्घाभाव आर्षः ।

41 Cr. Ed. सौ.मा. 22. 82-83 (Second line of 82 and first line of 83.)
टीका 42.84 पत्रा 148
टीका ... केनचित् अज्ञानिनामधेयेन लोकेष्वाधिकारभेद-विभिन्नेष्वाधिकारिषु तदर्थं निमित्ते सप्तमी अयं वर्णाश्रमविभाग रूपो मार्गः । ....

42 Cr. Ed. सौ.मा. 23.1.
टीका 43.1. पत्रा 149.
{ ब्रह्मणो ... श्रेयकारणम्

संस्कृतटीका – श्रेयसः कारणं श्रेयकारणं विसर्गलोप आर्षः ।

43. Cr. Ed. सौ.मा. 23.9.
टीका 43.9. पत्रा 150
{ एवं स्तुतो महादेवो ...... उवाच मा भैः कृजत लिङ्गं वो भवितापुनः ।

संस्कृतटीका – मा भैः भयं मा कुरुत मा भीः इति वक्तव्ये मा भैः इत्यार्षः ।

Cr. Ed. सौ. भा. 14.36. { ब्रह्मावर्ते नरः स्नात्वा . . . स्वेच्छया।
टीका, 34.36 पत्रा 122 {

टीका – ब्रह्मज्ञानेन समन्वितो भवति आत्मनेपदमार्ष स्वेच्छया च प्राणान् मुंचतीत्यनेन जितमृत्युर्भवतीति सूचितम् ।

Cr. Ed. सौ० भा 14.51 श्लोक differs
टीका 34.47. { पुरा कृष्णमृगास्तत्र व्याधैर्मार्गणपीडिताः
वगाह्य तस्मिन् सरसि . . . . . . ॥

टीका – वगाह्य अवगाह्य भागुरिमतेनोपसर्गाद्याक्षरलोपः ।

35 Cr. Ed. सौ भा. 17.3. { तत्रागता अप्सरसो . . .
टीका, 37.3. पत्रा 130. { . . . निन्दिता ।

संस्कृत टीका – प्रियमपीच्यदर्शनं यासां आसेचनकदर्शना इत्यर्थः यतो रुचिरा सुन्दर्यः स्निग्धाः सुकुमाराः स्नांति स्नांति यगार्षः अनिन्दिता निन्दाशून्या ।

The Sloka differs in first line

तत्रागता अप्सरसो रंभाद्या प्रियदर्शना ।

36

Cr. Ed. सौ भा. 17.15-16. (Second line of the 15th Sloka and first line of 16th Sloka. अंगुल्यग्रेण . . . सन्निभम् ।
टीका. 37.17. पत्रा 131.

संस्कृत टीका – ताडयदताडयत अडभाव आर्षः भवः सत्ता प्रकाशः शिवः तस्य देवस्य हिमेन सन्निभं सदृशं भस्म ।

37. Cr. Ed. 19.40 { श्लोक – शोधयित्वा . . . . तत्रकल्पयन् ।
टीका 39.40 { वही पाठ

संस्कृत टीका – शोधयित्वा निर्मलीकृत्य सरस्वत्यरुणयोः संगमं संभेदं कल्पयन् कल्पयन् अडभाव आर्षः ।

38 ~~Last of all~~. Cr. Ed. 20.24-25. (~~First~~ Second line of 24[15]
~~Cr. Ed.~~ (and first line of 25[15] यत्रपूर्वं...

टीका, 40. 22. पत्रा 138. — — पद्मनाभोत्तरे स्थित ।
संस्कृत टीका – पद्मनाभ उत्तरे सन्धिरार्षः ।

39 Cr. Ed. सौ. मा. 22.63.
टीका. 42. 64 पत्रा 146. } शृण्वंति बहवो यत्र तत्र तन्तु विधीते, तस्य व्रतस्य सुभगा इति मत्वा गमिष्यथ ।

संस्कृत टीका – हे सुभगाः संदर्यः तस्य ~~व्रतस्य महात्म्य~~ व्रतस्य मत्वा ज्ञात्वा कर्माणि अर्थ्यो इति प्रकाशार्थः ।

40. Cr. Ed. सौ. मा. 22.75. टीका 42.77: क्रूरकर्मिणः क्रूर क्रूर चोष्ठितम् । पत्रा 147.
टीका क्रूरकर्मणः क्रूरकर्माणः सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इति दीर्घाभाव आर्षः ।

41 Cr. Ed. सौ. मा. 22. 82-83 (Second line of 82 and first line of 83.).
टीका 42.84 पत्रा 148
टीका... केनाचित अज्ञानिनामवेद्येन लोकेष्वाधिकारभेद-विभिन्नेष्वाधिकारिषु तदर्थं निमित्ते सप्तमी अर्थं वर्णा-श्रमाविभाग रूपो मार्गः । — — . — — .

42 Cr. Ed. सौ. मा. 23.1.
टीका 43.1. पत्रा 149. } ब्रह्मणो . . . श्रेयकारणम्
संस्कृतटीका– श्रेयसः कारणं श्रेयकारणं विसर्गलोपआर्षः ।

43. Cr. Ed. सौ.मा. 23. 9.
टीका 43. 9. पत्रा 150 } एवं स्तुतो महादेवो . . . . . . उवाच माभैर्व्रजत लिङ्गं वो भवितापुनः ।

संस्कृतटीका – माभैः भयं मा कुरुत माभीष्ट इतिवक्तव्ये माभै-रित्यार्षः ।

सो० भा.

44 Cr. Ed. 23.13.
टीका 43. 13.

{ युष्माभि पातितं . . . . प्रतिष्ठितम्

टीका – युष्माभिः सारथेत्वात्परस्परं साहाय्येन महालिंगं यत्पातितं
[illegible]रः सन्निहित्यामित्येकं पदं सरासिविद्यमानायांश्शुद्धिमिच्छुन प्रथमार्
[illegible]र्थे तृतीया सन्निहित्यां सुविख्यातं युष्माभि साहाय्येन प्रतिष्ठितं
कार्यामिति शेषः ।

160 पत्र पढ़ लिये हैं ।

डा. ओम प्रकाश गुप्ता
D4
पूप कौलौनी
वाराणसी 5-

डा. ओम प्रकाश गुप्ता
निशात सिनेमा के सामने
वालासीर क्वॉंच मास्टर

र. देव प्रकाश गुप्ता   मकान का पता है।
10 F Kamla Nagar.
सब्जी मण्डी
दिल्ली

र. धर्म प्रकाश गुप्ता   दुकान
नई सड़क
चाँदनी चौक
दिल्ली

